KJ-1004

B.A. (Part - I)
Term End Examination, 2020

HINDI LITERATURE

Paper - I

प्राचीन हिन्दी काव्य

Time : Three Hours] [*Maximum Marks* : 75

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। अशुद्ध एवं अनर्गल लेखन पर अंक काटे जाएँगे। एक प्रश्न का उत्तर एक ही स्थान पर निरन्तरता बनाते हुए लिखिए। उत्तर की समाप्ति पर समाप्ति सूचक चिह्न का प्रयोग अवश्य कीजिए।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7×3

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहूँणाँ, बहुरि न आवौं हट्ट॥
जाका गुरू भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे-अंधा ठेलिया, दुन्यूँ कूप पडंत॥

अथवा

पिउ वियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा नित
बोले पिउ पीऊ॥

अधिक काम धै सो रामा। हरि लेई सुआ
गएउ पिउ नामा॥

बिरह बान तस लागन न डोरी। रकत पसीज,
भीजि गइ चोली॥

सूख हिया, हार भा भारी। हरे हरे प्रान
तजहिं सब नारी॥

खन एक आव पेट महँ साँसा। खनहिं जाइ,
जिउ, होई निरासा॥

पवन डोलावहिं, सोचहिं चोला। पहर एक
समझहिं मुख बोला॥

प्रान प्रयान होत को राखा। को सुनाव प्रीतम
कै भाखा॥

(ख) हरि गोकुल की प्रीति चलाई।

सुनहु उपंग सुत मोहिं न बिसरत, ब्रजवासी
सुखदाई॥

यह चित होत जाऊँ मैं अबहीं, यहाँ नहीं मन
लागत॥

गोप संग्वाल गाय बन चारत अति दुख पायो
त्यागत॥

(3)

कहँ माखन-चोरी? कहि जसुमति पूत जैब, करि प्रेम।

सूरस्याम के वचन सहित सुनि व्यापत आपन नेम॥

अथवा

एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु विराजा॥

सकल सुकृत मूरित नरनाहू। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू॥

नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे। लोकप करहिं पीति रूख राखें॥

त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरिभाग दसरथ सम नाहीं॥

मंगलमूल रामु सूत जासू। जो कछु कहिअ थोर सबु तामू॥

रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुट समकीन्हा॥

श्रवन समीप भए सित केसा। मनहूँ जरठपनु अस उपदेसा॥

नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू॥

(ग) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत कानन छवै।

हँसि बोलनि मैं छवि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै॥

लटलोट कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।

अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अवै घर च्वै॥

अथवा

घनआनंद जीवनमूल सुजान की कौधन हूँ न कहूँ दरसैं।

सुनजानियै धौं कित छाय रहे दृग चातक प्रान तपे तरसैं।

बिन पावस तौं इनध्यावस हो न, सु क्यौं करि यौं अब सो परसैं।

बदरा बरसैं रितु मैं धिरिकै नित ही अंखियाँ उधरी बरसैं॥

2. ''कबीर का काव्य उनकी अनुभूति का सच्चा दर्पण है।'' सोदाहरण विवेचना कीजिए। 8

अथवा

जायसी के नागमती वियोग खण्ड के आधार पर रानी नागमती की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

3. भ्रमरगीत में वर्णित गोपियों के विरह की विशदता, व्यापकता एवं मार्मिकता का वर्णन कीजिए। 8

अथवा

तुलसीदास के समन्वयवादी दृष्टिकोण पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

4. घनानंद के काव्य में प्रेम की सरस अभिव्यंजना हुई है। स्पष्ट कीजिए। 8

अथवा

''घनानंद प्रेम के पपीहे थे।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 3×5

(क) विद्यापति के काव्य में भक्ति और शृंगार

(ख) रहीम के काव्य में नीति तत्व

(ग) रसखान का संक्षिप्त जीवन परिचय

(घ) रीतिकालीन काव्यधाराएँ

(ङ) अष्टछाप के कवि

(च) प्राचीन काव्य की पृष्ठभूमि

(छ) रसखान के सवैये

6. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×15

(क) 'सुजान रसखान' किसकी रचना है ?

(ख) 'वात्सल्य रस का सम्राट' किस कवि को कहा जाता है ?

(ग) 'विनय पत्रिका' किस कवि की रचना है ?

(घ) 'भ्रमरगीत' नाम क्यों पड़ा ?

(ङ) ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि कौन हैं ?

(च) दास्यभाव की भक्ति किस कवि ने की है ?

(छ) किसी एक सूफी कवि का नाम लिखिए।

(ज) सूर के आराध्यदेव कौन हैं ?

(झ) 'पद्मावत' किस भाषा में रचित है ?

(ञ) घनानंद की प्रेयसी का क्या नाम था ?

(ट) रहीम कवि का पूरा नाम लिखिए।

(ठ) 'साखी' शब्द का क्या अर्थ है ?

(ङ) विद्यापति के आश्रयदाता राजा का क्या नाम था ?

(ढ) 'आखिरी कलाम' किसकी रचना है ?

(ण) किस कवि को मैथिल कोकिल कहा जाता है ?

———